मौत की हार

मौत की हार

maut ki hār

The Defeat of Death
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
published and printed by
Good Word, New Delhi

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

सहन के कोने में चारपाई पर वह ख़ामोश बैठी आसमान की तरफ़ टिकटिकी बाँधे देख रही थी। गोद में बच्चा भूक के मारे हाथ-पाँव मार रहा था, लेकिन वह बिलकुल बेख़बर थी। सामने ही ज़मीन पर चार बच्चे खेल रहे थे, मगर उसे कुछ पता न था। वह लड़ झगड़ रहे थे, शोर कर रहे थे, उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। वह तो अपनी ग़म की दुनिया में बिलकुल खोई हुई थी।

दो ही दिन पहले उसका बड़ा लड़का एक हादिसे का शिकार हो गया था। दो दिन तक तो दोस्त और रिश्तेदार मातमपुर्सी के लिए आते रहे, लेकिन आज उनके चले जाने के बाद उसे तनहाई नसीब हुई थी। अब वह ज़्यादा महसूस कर रही थी कि उस पर कितनी भारी मुसीबत आन पड़ी है। दो दिन तक तो रोना धोना होता रहा था, लेकिन अब हर तरफ़ गहरी ख़ामोशी छाई हुई थी।

एक एक करके तमाम वाकियात उसके सामने आ रहे थे। असलम उस दिन भी हसबे-मामूल स्कूल के लिए रवाना हुआ। घर से ज़रा दूर कुएँ पर उसे चंद दोस्त मिल गए। वह वहीं खेलने

लग गए। अचानक किसी ने उसे धक्का दिया। वह ख़ुद को सँभाल न सका और कुएँ में गिर गया।

धड़ाम से पानी में गिरने के बाद जब वह ऊपर आया तो बहुत चीखा चिल्लाया। लेकिन कुछ समझ में न आता था कि वह क्या कह रहा है। लड़के बेहद घबराए हुए कुएँ के अंदर झाँक रहे थे। असलम फिर पानी के नीचे चला गया। उसका सर दुबारा नज़र आया। वह बेतहाशा हाथ-पाँव मार रहा था। फिर पानी के नीचे चला गया। चंद बुलबुले उठे और पानी बिलकुल साकिन हो गया।

बाद में एक आदमी ने उसे बाहर निकाला, लेकिन अब तो देर हो चुकी थी। एक पड़ोसी जल्दी से डाक्टर को बुला लाया, जिसने बड़े जतन किए लेकिन सब बेसूद। असलम की हमेशा हमेशा के लिए आँखें बंद हो चुकी थीं। दोस्त, पड़ोसी और डाक्टर सब बेबस थे। वह कुछ न कर सकते थे।

* * *

तक़रीबन दो हज़ार बरस हुए हज़रत ईसा का भी एक दोस्त फ़ौत हो गया। दोस्त का नाम लाज़र था। लाज़र की दो बहनें थीं, और तीनों मसीह से बड़ी मुहब्बत रखते थे। जिस दिन लाज़र बीमार पड़ा तो उसकी बहनों ने हुज़ूर को इत्तला भिजवाई। लेकिन वह देर से आए। फिर लाज़र मर गया। दोनों बहनें ग़म से निढाल हो गईं।

वह भी उस औरत की मानिंद जिसका बच्चा कुएँ में डूब मरा था बिलकुल लाचार थीं। लाज़र को दफ़न कर दिया गया। चार दिन के बाद बड़ी बहन मर्था को मालूम हुआ कि हज़रत ईसा आ रहे हैं। वह भागकर उन्हें मिलने गई। हिचकियों के दरमियान बोली, "अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।"

उन्होंने बड़ा अजीब-सा जवाब दिया,

> क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। (यूहन्ना 11:25)

थोड़ी देर बाद जब हज़रत ईसा लाज़र की क़ब्र पर पहुँचे तो उन्होंने क़ब्र की तरफ़ देखते हुए ऊँची आवाज़ में पुकारा,

> लाज़र निकल आ! (यूहन्ना 11:25)

इस पर वह आदमी जो चार दिन का मुर्दा था फ़ौरन क़ब्र से बाहर निकल आया। उन्होंने उसे उसकी बहनों के सुपुर्द कर दिया। ख़ुशी ने मातम की जगह ले ली। लोग हैरान हो गए कि एक आदमी जो मर चुका था अब किस तरह दुबारा ज़िंदा हो गया है।

आज अगर आप अपने किसी अज़ीज़ की क़ब्र पर खड़े होकर कहें "ऐ फ़ुलाँ फ़ुलाँ उठ खड़ा हो" तो क्या होगा? आपकी कोशिश बेकार होगी क्योंकि मौत और ज़िंदगी का मालिक तो सिर्फ़ हक़

तआला ही है। तो फिर हज़रत ईसा ने किस तरह लाज़र को ज़िंदा कर दिया? इसकी सिर्फ़ यह वजह है कि वह कोई आम इनसान तो थे नहीं। इंजील जलील में मरक़ूम है कि वह बारी तआला की तरफ़ से आए थे। जो इलाही ताक़त उन में थी उसने अपने मरे हुए दोस्त लाज़र को दुबारा ज़िंदगी बख़्श दी।

क्या आप मौत से डरते हैं? क्या आपको अपनी आक़िबत की फ़िकर है? हज़रत ईसा का इर्शाद सुनिए :

> क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। (इंजील जलील, यूहन्ना 11:25-26)

हम मौत के बाद उन पर ईमान नहीं ला सकते। लाज़िम है कि हम जीते जी उन पर ईमान लाएँ। अगर हम ऐसा करेंगे तो कभी न मरेंगे।

इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह है कि हमारा ख़ाकी जिस्म अबद तक इस दुनिया में ज़िंदा रहेगा? हरगिज़ नहीं। यह एक नई क़िस्म की ज़िंदगी है जिसे हज़रत ईसा ने “कसरत की ज़िंदगी” का नाम दिया है। हम में उनकी ज़िंदगी होगी, और हम उन में ज़िंदगी गुज़ारेंगे। मौत के बाद हमें नया बदन मिलेगा और हम दायमी तौर पर ख़ुदा के साथ ज़िंदा रहेंगे।

हुज़ूर के वादों में एक यह भी है,

> मैं ...वापस आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा
> ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो।
> (इंजील जलील, यूहन्ना 14:3)

उस ग़म की मारी माँ को इन अलफ़ाज़ से कितनी तसल्ली होगी।

हक़ तआला आपको गैरफ़ानी ज़िंदगी देना चाहता है। क्या हम उसे क़बूल करने के लिए तैयार हैं? उन्होंने ही कहा है,

> क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ।